

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक हस्तलिखित संग्रह दाखल क्र. 11-2349 विषय काळ

स्य अहिब्धन्य नमः शिरास अनुषुष् छंदस नमः मुरव सुद्दनिरूप नृसिंह देवताथे नमः हद्ये क्षीं बीजायनमः नामी हुं शक्तयनमः पाद्योः फट् कीलकायनमः सविंगे इष्टिसिय्यये विनियोगः अय कर्षडगन्यासः ॐ अन्यकायनमः अगुष्ठाभ्यानमः अठं विचकायनमः तर्जनी॰ अठं साचकाय मध्यमाभ्यां. अं असुरातक चकाय॰ अनामिका म्यानमः अं सर्व लोक रसणाचकायनमः किनिष्ठिकाम्यानमः ॐ सुद् र्निचकायनमः करतलकर्ष्याभ्यानमः एवहद्या दिन्यासः भ्रभवः स्वरोमितिदिग्बंधः अधधानं यः सं भाइजीमानो गगड गड गडनबाल -बंद्राघ दंशो बोमा भो ब्याप्यमानो इनडइ इनड इनड न्हाडयमानः सटाभिः

सद्रि दंष्टाग्रेः स्वाद्यमानः कटटकटक्टन् तर्जमानासु कव रेंद्रे निष्कांतो हारयुक्ता गगह गह गह मातुमां श्री हिसंहः इतिध्यात्वा मानसोपचोरेः संयुज्य मणम्य भागादिदिग्वंघनं कुयति यया ॐ अचकाय लं ऐंद्रीं दिशं बंधयामिस्वाहा ॐ विचकाय रं आग्नेयीं दिशंबं धयामिस्वाहा अहस्तिचकाथ हे याम्या दिशं बंधयामि स्वाहा ॐ अस्तरांतक चकाय हमं नेकितिं दिशंबंघया

मिस्वाहा ॐ सर्वलोक रक्षणा चका य वं वारुणीं दिशं बंधयामिस्वाहा ॐ सद्वनि चकाय वायवीं दिशं बंधयामिस्वाहा ॐ आशीविष-चकाय संकेविशिदि गंबंधयामिखाहा ॐअधारचकाय गंरानीं दिश बंधयामिस्वाहा ॐ महाभय निवारण चकाय णं ऊर्धी दिशं बंधयामिस्वाहा ॐ नारिसंह चकाय-हीं अधरा दिशांबंध॰ ॐ सहस्वार हं फट्स्वाहिति दिग्बंधः ॐन सुद्रिमी भगवते बास्रुद्वाय भोभो सहद्रीन दुः रवंदार्थ कर्वच दारय दुरितं हन हन पापं मय मयां तमवादिज्वर माहिम्बर्ज्बर्ब्राम्हज्वर्वेष्णावज्वर्भ्तज्वर्भतज्व रविषम उपर्वात जवर पित्त जवर क्षेटमे जवर एकाहि क हथाहिक व्याहिक चातुर्धिक पासिक मासिक बेमासिक षाणमासिक सांवत्सरिक संतज्वर सान्नि पातिकांतरितापस्माराति सारादिकान् सर्वज्वरान्

खेदय खेदय खिंघि खिंघि मिंघि भारोग्यं कुरुक् क हां हां हुं हुं हुं फट्स्वाहा ॐ नमाभगवत सहदर्शन चकाय महास्त्राजाय सर्वभूतेम्यो भयं नाश्य नाश्य शिशः श्लाह्मिश्ल कर्णस्ल कं उसल हदय श्लबाहु श्ल कुाक्षिश्ल किटिश्लांगश्ल लिंगश्ल योनिश्ल गुद्युल जानु यूल जायायूल पाद्यूल पाय्वे यूल सवी गश्लं वातश्ल पित्तश्लं के ध्याश्लादि सर्वश्रलानि

मूलय निम्लिय दानव देत्य कामिनी वेताल बम्हराह्मस खाया यहादिस वीयहान्। छि घि छि घि मि घि भस्मी कुरु भरमीकुरु परम्बान्परय माणि परत्वाणि छद्य छद् ॰य-हाफट्रसारा-होफट् न्ह फट्रसाहा २ अव नमाभग वते महागरुड ध्वजाय एहे।हि सर्व ज्वर्भयं चकेणाछि घि छिं घि मिं घि में घि शंरवन्यक गदाप दो: सर्वभय हनहन नाश्य नाश्यमां रक्ष रहा सवर्दाक बचा

W.

ज्ञापय माज्ञापय जनार्दन हुं फट् स्वाहा ३ ॐ नमा भग बते ॐ क्षों सद्विनाय महास्मराजाय गंघव यक्षराक्ष स भय छिषि छिषि बिदारय विदारय परमं भान्यासय ग्रास्य परयंत्र परतंत्र दृष्टचेटक करण महामारी वेताल भ्तमेतिपिशाचादीन् भक्षयभक्षय अचकायविचका य से चकाय असरांतक चकाय सर्वलोक रक्षण चकाय सहदान चकायास्वराजाय हु फट् स्वाहा ४ ॐ नमो

स्तद्राः भगवते महास्तद्रिनचकाथ ज्वात्रामालिने आदित्य कवनः रूपाय सर्वतो मां रक्षरक्ष महा बल्डाय ज्वाला परिवर्ति न् अ क्षों सर्वग्रहान् हन हम हं फट् स्वाहा ५ अ न मो भगवतेस्वराजाय ॐ क्षीं हीं भी नृसिंहाय ॐ क्षीं देबदानबदेत्य युजिताय पदीमको ट्यादित्य सहस्रमम तेजसे वजदरव देष्ट्राय्घाय हं विकीणिक सरसटाय क्ष मित महाणिव भेरी दुंद्मिनि घीषाय सर्वमंत्री तार्णाह

द्याय एह्यहि भगवन्नारसिंह पुरुष वर परब्रह्म सर्वस त्वान्सफुर स्फुर विज्ञां भय विज्ञां भय सिंह मादं मुच सुंच मर्य मद्य विद्रावय विद्रावय पास्य प्रास्य सर्वमंत्रा न्सर्वामित्र जाती स्व हम हम संस्पेषय संस्पय दाह्य दाह्य ज्वालाः स्फुर्स्फुर्सघातय संघातय सर्वता ज्वाला वज्नसमीर चकेण पाताल ग्रहानुचा टयो चाट य सर्वतानंत ज्वाला वज्रश्र जालिन मत्यिला क यहानु स्तद्वि चाटयाचाटय सर्वतो ज्वाला व ज्वपंजरेणस्वरिलोक ग्रहा कवच. नुचादया चाटय हदयं स्कोटय स्कोटय ध्रिनिध्निशीघं देहदहदहपचपचमयमय पाषयधाषय निकृतयनिक तय ताबत्समागतपातालम्यः फट् असरम्यः फट् जीब जातिम्यः फट् अन्य जातिम्यः फट् मंबजातिम्यः फट् सर्वान् मंत्रान् यंत्राणि तंत्राणि भक्षये भक्षय नार्सिह वि ष्णासर्वपातालेम्यः सर्वपापग्रहेम्यः सर्वपिद्रवेम्यः सर्वमंब

विद्ययारस्प अं आं ही क्षीं हुं फर् स्वाहा ६ अर्ज नमा भगवते महावीर अधार नारसिंह महाबल पराक्तमायराम दूताय हनुमते अघार कालांतक शाकिनी डाकिनी काकि नी लाकिनी राकिनी हाकिनी मारी महामारी भूत मेत पि शाच यक्षिणी जलयहिणी स्थलयहिणी अंतरिह्मयहिं णी यस्पराक्षम गंघर्व ब्रह्मराक्षम वेताल यमदूत मंबग्र दिसवेश्रु स्पादिकान् दूरस्यान् समीपस्थान् भ्रेतभविष

हातमाना दिवाचरान् सध्याचरान् रात्रिचरान् जलस्थान् स्थलस्थान् बालग्रहान् युतनास्कोरक ग्रहान् लघुस्थान् दरस्थान् यहान् सर्वानाश्य नाश्य दह दह हन हन प्च पच मर्य मर्य स्वाद्य रवाद्य भक्ष्य भक्ष्य भारय बोटय छिंघि छिंघि मिंदि मिंदि भेद्य भेद्य प्रास्थ ग्रास् य भासय बासय जृभय जृभय नुद्नुद् सह सह मोहय मोहय यसमापय घसमापय शोषय शोषय अघार नार

सिंहा घोरमूर्ते अघोर भेरव महाबीर हन्मन् सर्वसत्वान्बा धय बाघय ठः ठः ठः हं फट् स्वाहा ७ ॐ नमो भग वत्र अधारनारास्त्र । अभुवनाधा अवर महाभामपराक्रम विघातक भूतमेत पिशाच शाकिनी डाकिनी यक्षराक्ष्स थमदूत ब्रम्हराह्मस वेताल भेरव कल्पांत नाना यहिंगी कंकालादिक यहान् मर्यमर्य बंघय बंघय अस्पय भक्षय मार्य मार्य छेद्य छेद्य मथय मथय रबाद्य

स्तद्रा रवाद्य क्षोभयक्षोभय स्तंभय संभय पर्कृत मंत्र यंश्तं कवन्। न चेरक पुत्तालिका हीन् विध्वं स्या विध्वं स्या ना श्य नाइाय ठः ठः ठः हं फट् स्वाहा ई अर् नमो भगवते रामद्त महाभय निवारक भूत मेतापेशाचादियहान् बह्मराह्मसादि ग्रहान् नाश्यं नाश्यं महाभीमपराक म पर्कृत मन यन तन न्यस पुताल का होन् दूर्स्यान् परदेशस्थान् एहास्थतान् सर्वन्याधिस्थतान् बहि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अ श्रीमिस्थितान् उपवेशास्थितान् मूनस्थान् सूनस्थान् स्वक्रतान् वस्मकृतान् अन्वक्रतान् काष्ठकृतान् वमं हतान् पाषाणाहतान् रोमहत्तान् केशहतान् मृति कादिकतान् जीवविशेषकृतान् ओषघादिकृतान् विमाकारान् घटाकारान् बंघाकारान् जीवविशे षान्धुडाकारान् जलस्थान् अंतिर्द्धास्थतान् पाषा णमध्यगतान् इक्षेत्रबमानान् नगर्क्षितान् रुद्

सत्वि भूमिस्थितान् नानाकार्रूपाकारान् नानादेवतिका क रान् नानाबिलिभक्षान् इारीरदाहशोषकारकान् वायुसंज्ञान् श्लसंज्ञान् गातिखदंकान् रक्तगा षकान् मासमक्षकान् कुडलाक्वातेकारकान् ती हणन्यलकारकान् एकागहारकान् कपालन्य लकान् यवपछुद्कार्कान् परस्पर्वियहाकार्का न् नानावणीन् सर्वचेरकान् नानासमागतास्त

द्रयवेदनां नाश्य नाश्य वंघय वंघय रवाद्य रवाद्य पास्य प्रास्य शोषय शोषय मथय मथय छेद्य छ द्य भेद्य भेद्य भीषय भीषय मर्य मर्य रोषय रोष य घात्य घात्य रास्त्रोधनाचिरण भासय भासय मोचय माचय तान् सर्वान् नुद् नुद् सहद् सहद् भरमा कुरु भस्मीकुरु भो रामदूत वीक्षणेन ठठः ठःठः हुंफट्स्बाहा ९ अई नमो भगवत अघोरेश्वरायमहा

सिद्दि भय निवारणाय अघारमूर्तये अघारमेरवाय परकृत मंभयं भतं न कुल चेटक पूलनादीन् हनहा मिष मिधि छिंधि उच्चारयोच्चारय चेरक बंधकेश चे रक चर्मचेरक बरूमचेरक मृतिका चेरक गोमय चेर कान्न चेटक शुलानाश्य नाश्य परदेशस्थितचेटका नाराय नाराय समीपस्थित चे हका नाराय नाराय यहस्थितचेरकानाश्य नाश्य नगरस्थितचेरका

नाराय नाराय नानाकारानानाकृति कार्कान् मारकन्व रकान् शीघं ना शय ना शय छेदय छेदय रबादय रबादय नाना बिहान भक्षक छेदक चेटका नुचारयो चारप नाना छेद कारक चेटका-भस्मी कुरु भस्मी कुरु ॐ हा हो नं नुं हुं हुं फट्स्वाहा १० ॐ नमो मगवते महाग र डाय एत्यहि आवेदाया वेदाय दुष्टराह्मसान् छिंघ छिंघि महागरुडास्व दृष्टज्बर भूत मेतिपिशाच ब्रह्मरा

स्तर्जा क्षिमादिकृतां व्ययां छिंघि छिंघि मिंघि मिंघि महागरुड वंयय वंयय हुं फट् स्वाहा ११ इति श्री द न हि यां द न व सं णि ६०

श्री णे य मः अस्य श्रीसिद्दनि महामंबस्य अहि र्बुब्य बर्षय नमः शिरास अनुष्पू छंदसनमः मुर्व चक रूपीहरिदेवताये नमः हृदये औं अचकायरचाहा अंगुष्ठा भ्यां नमः अक्षे विचकाय स्वाहा तर्जनी भ्यां अक्षे सुचकाय स्वा हा मध्यमा म्या वषट् ॐ धी चकाय॰ अनामिका म्या- हुं ॐस चकाय किनिष्ठिका भ्यां वीषद् ॐ ज्वात्मा चकाय- अस्वायफ द् अ अचकायस्वाहा हदयायनमः अ विचकायस्वाहादी

रसेस्वाहा ॐ सुचकाय॰ शिर्वाये वषट् ॐ धीचकाय कवचायहं ॐसचकाय नेववयाय॰ॐ जवालाचका य अस्वायफट् दिग्बंघनं यथा ऐंद्रीचकेण बघनामिन मध्यकायस्वाहा पाच्यां ऐन्हींचस्वाहा आगेनय्यां ऐं कीचि॰ हा दिसिणायां ऐ व्हींच- हा नेक्त्यां ऐ हींच॰ हा मतीच्या ऐंन्हींच हा वायच्या ऐंन्हींच हा उदीच्यां ए-हीच-हाईशान्यां एं-हीच-ऊध्वियां एं-हीच-अध

रायां ॐ बेलाक्यं रहमरहम हं फट्स्वाहा अनेन मंबेणा समतादग्नियाकारं विचित्य ध्यायेत् यथा कत्यांतार्क मकाशं विभुवन मिरिवलं ते जसापूरेयं ते रक्ताक्षं पिंगकेशं रिषुक्ल भयदं भीमद्षा हहास शंरवं चक्त गदा छो 'ष्टुषु तरमुसलं चापपाशां कुशान्से बिद्याणं दो भिराद्यं मन सिमुरिषुं भावये चक्सं इं इति ध्यात्वामानसोपचोरेः संयुज्य यथाशक्ति जापानंतरं युनन्यं रला गुह्यातिगुह्य

तिमंत्रेण जपं निवेद्य कवचपाढं कुर्यात् मूलपुरश्चर्या १२०००० हाद्दालक्ष्मसंख्या मूल सहस्रार हुं फट् स्वाहा ॥६६ दिघत्युपनाम्ना दां करेणालि रिवतं श्री गुरुचरणा रविंदापणामस्तु. [OrderDescription]
,CREATED=18.01.20 13:21
,TRANSFERRED=2020/01/18 at 13:26:07
,PAGES=26
,TYPE=STD
,NAME=S0002559
,Book Name=M-2349-SUDARSHAN KAVACH MAHAMANTRA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF

,FILE7=0000007.TIF

FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF ,FILE11=0000011.TIF ,FILE12=0000012.TIF ,FILE13=0000013.TIF ,FILE14=0000014.TIF ,FILE15=0000015.TIF ,FILE16=0000016.TIF ,FILE17=0000017.TIF ,FILE18=0000018.TIF ,FILE19=0000019.TIF ,FILE20=00000020.TIF FILE21=00000021.TIF ,FILE22=00000022.TIF ,FILE23=00000023.TIF

FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF